तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
लाघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

शैलेन्द्र का चेहरा कब और क्यों मुरझा गया था? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

शैलेन्द्र का चेहरा तब मुरझा गया जब उनके अभिन्न मित्र राजकपूर ने उनकी फ़िल्म में काम करने के लिए अपना पारिश्रमिक माँगा और वह भी एडवांस। उन्हें लगा कि राजकपूर तो उनकी सही आर्थिक स्थिति के विषय में जानते ही हैं, तब भी उन्होंने ऐसी बात क्यों कही? यह सोचकर उनका मुख मुरझा गया।

2015
लाघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक कौन हैं तथा सामान्य रूप से वे किस प्रकार के कलाकार रहे हैं? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक राजकपूर हैं। सामान्य रूप में वे ऐसे कलाकार रहे हैं जो आँखों से ही अपनी बात करते हैं और भावों को मूर्त (साकार) रूप दे देते हैं।

Question 3.

राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फ़िल्मों के नाम लिखिए?

Answer:

राजकपूर द्वारा निर्देशित फिल्में हैं– संगम, मेरा नाम जोकर, सत्यम् शिवम् सुंदरम् आदि।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 4.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र की हैसियत से शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलताँ के खतरों से आगाह भी किया। पर वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी। 'तीसरी कसम' कितनी ही महान फ़िल्म क्यों न रही हो लेकिन यह एक दुखद सत्य है कि इसे प्रदर्शित करने के लिए बमुश्किल वितरक मिले। दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। उसमें रची-बसी करुणा तराज़ू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। इसीलिए बमुश्किल जब 'तीसरी कसम' रिलीज़ हुई तो इसका कोई प्रचार नहीं हुआ। फ़िल्म कब आई, कब गई मालूम ही नहीं पड़ा।

(क) आर्थिक खतरों के बाबजूद शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' बनाने का निर्णय क्यों लिया था? तथा उसका क्या परिणाम रहा?

(ख) सच्चे मित्र की हैसियत से राजकपूर ने शैलेंद्र को क्या समझाया होगा? अपनी कल्पना तथा पाठ के आधार पर लिखिए।

(ग) सामान्यतया लोग कैसी फ़िल्म देखना पसंद करते हैं, और क्यों?

Answer:

(क) आर्थिक खतरों के बावजूद, शैलेंद्र ने आत्मसंतुष्टि के लिए 'तीसरी कसम' बनाने का निर्णय लिया था। पर इसका यह दुष्परिणाम हुआ कि अच्छी फ़िल्म होते हुए भी इसे बमुश्किल वितरक मिले। फ़िल्म कब आई कब चली गई मालूम ही नहीं पड़ा। कुल मिलाकर यह फ़िल्म आर्थिक दृष्टि से एक घाटे का सौदा रही।

(ख) सच्चे मित्र की हैसियत से राजकपूर ने शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह किया होगा। उन्होंने फ़िल्म को बनाने में आने वाली दिक्कतों, जैसे– आर्थिक तंगी, वितरक न मिलना, प्रचार-प्रसार में होने वाली समस्याओं के विषय में भी शैलेंद्र को बताया होगा।

(ग) सामान्यतया आजकल लोग मसाला फिल्में देखना पसंद करते हैं। उनके लिए फ़िल्म मात्र मनोरंजन का साधन है। 'फुल पैसा वसूल'। जबकि 'तीसरी कसम' फ़िल्म की गहरी संवेदना दर्शकों की, वितरकों की समझ से परे थी। इसीलिए जो मुकाम 'तीसरी कसम' को मिलना चाहिए था वह प्राप्त न कर सकी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2014
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

शैलेंद्र के गीत कैसे होते थे?

Answer:

शैलेंद्र के गीत भाव-प्रवण होते थे– दुरूह नहीं। भावनाओं से ओत-प्रोत उनके गीतों की भाषा सहज एवं सरल होती थी।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 6.

'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र' पाठ में राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय किसे दिया गया और क्यों?

Answer:

'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ में राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय फ़िल्म की पटकथा को दिया गया है। 'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता है जिसमें एक मार्मिक कृति को पूरी तरह से रील पर उतार दिया गया था। स्वयं राजकपूर भी अपनी अपार प्रसिद्धि को पीछे छोड़ 'हीरामन' की आत्मा में उतर गए है जो अपने आप में उनकी अभिनय कला का चरमोत्कर्ष है।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 7.

'तीसरी कसम' के आलोक में कलाकार के दायित्व को स्पष्ट कीजिए।

Answer:

शैलेंद्र के अनुसार, कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचियों का परिष्कार करे, वह दर्शकों के ज्ञान की वृद्धि में सहायक हो। सच्चा कलाकार दर्शकों के मानसिक स्तर का विकास करता है। वह दर्शकों के मन में जागरूकता को जन्म देता है और दर्शकों में अच्छे-बुरे की समझ को बढ़ाता है। सच्चे कलाकार का दायित्व है कि वह उपभोक्ता की रुचियों में सुधार लाने का प्रयत्न करे। उसके मन में धन कमाने की ही लिप्सा न हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 8.

एक निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझबूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जाते हैं। फिर भी शैलेंद्र ने फ़िल्म क्यों बनाई? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

एक फ़िल्म निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझ-बूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जाते हैं क्योंकि उन्हें बहुत सोच समझकर फ़िल्म का निर्माण करना पड़ता है। उनका उद्देश्य 'लाभ कमाना' होता है। 'धन-लिप्सा' ही उनकी मनोवृत्ति होती है। शैलेंद्र ने 'आत्म-संतुष्टि' व 'सुख' के लिए फ़िल्म का निर्माण किया था। व्यावसायिक सूझ-बूझ वाले लोग पैसा कमाने के लिए सस्ती लोकप्रियता को अधिक महत्त्व देते हैं, परंतु शैलेंद्र ने अपनी फ़िल्म में सस्ती लोकप्रियता के तत्त्वों को कोई महत्त्व नहीं दिया। शैलेंद्र अच्छी फ़िल्म बनाने की कला तो जानते थे, किंतु वे जनता को लुभाने की कला नहीं जानते थे। यद्यपि फ़िल्म-निर्माता के रूप में शैलेंद्र सर्वथा अयोग्य थे, फिर भी उन्होंने आत्मिक-संतुष्ट व 'आत्मिक-सुख' के लिए फ़िल्म का निर्माण किया।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 9.

'तीसरी कसम' फ़िल्म की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Answer:

'तीसरी कसम' फ़िल्म सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी। इस फ़िल्म की कहानी मार्मिकता एक कविता के समान है। इस फ़िल्म में मूल साहित्यिक रचना को उसी रूप में प्रस्तुत किया गया। इस फ़िल्म के गीत बहुत लोकप्रिय हुए। इसके गीत दुरूह नहीं थे। ये सभी गीत सहज व भाव-प्रवण थे, वे संदेशप्रद थे। इस फ़िल्म में राजकपूर व वहीदा रहमान जैसे महान कलाकारों ने अभिनय किया है। इस फ़िल्म तथा गीतों को शंकर-जयकिशन जैसे महान संगीतकार ने संगीत दिया जो प्रसारण से पूर्व ही अत्यंत लोकप्रिय हो गए। 'तीसरी कसम' फ़िल्म में अन्य फ़िल्मों की तरह चकाचौंध के बजाए, सहज लोकशैली को अपनाया गया। इस फ़िल्म ने अपने गीत-संगीत, कहानी आदि के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की। इस फ़िल्म में अपने ज़माने के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने अपने जीवन का सबसे बेहतरीन अभिनय कर सबको हैरान कर दिया। इस फ़िल्म को उनके अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह फ़िल्म जिंदगी से जुड़ी हुई है। फ़िल्मी सफर में इसे मील का पत्थर माना गया है। आज भी इस फ़िल्म की गणना हिंदी की अमर फ़िल्मों में की जाती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 10.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

'तीसरी कसम' कितनी ही महान फ़िल्म क्यों न रही हो, लेकिन यह एक दुखद सत्य है कि इसे प्रदर्शित करने के लिए बमुश्किल वितरक मिले। बावजूद इसके कि 'तीसरी कसम' में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे नामज़द सितारे थे, शंकर-जयकिशन का संगीत था, जिनकी लोकप्रियता उन दिनों सातवें आसमान पर थी और इसके गीत भी फ़िल्म के प्रदर्शन के पूर्व ही बेहद लोकप्रिय हो चुके थे, लेकिन इस फ़िल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था। दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। उसमें रची-बसी करुणा तराज़ू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। इसलिए बमुश्किल जब 'तीसरी कसम' रिलीज़ हुई, तो इसका कोई प्रचार नहीं हुआ। फ़िल्म कब आई और कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

(क) 'तीसरी कसम' फ़िल्म के लिए कौन-सा दुखद सत्य था?

(ख) उस फ़िल्म के गीत-संगीत की क्या खासियत थी?

(ग) किन नायक-नायिकाओं ने इस फ़िल्म का किरदार निभाया?

Answer:

(क) 'तीसरी कसम' फ़िल्म एक महान फ़िल्म थी, परंतु इस फ़िल्म का एक अत्यंत दुखद सत्य यह है कि इस फ़िल्म को प्रदर्शित करने के लिए कोई वितरक नहीं मिले। इस फ़िल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था। इस फ़िल्म का कोई प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया।

(ख) इस फ़िल्म के गीत-संगीत को उस समय के अत्यंत लोकप्रिय एवं महान संगीतकार 'शंकर-जयकिशन' ने बनाया था। इन संगीतकारों की लोकप्रियता सातवें आसमान पर थी। इस फ़िल्म के गीत फ़िल्म के प्रदर्शन से पहले ही लोकप्रिय हो चुके थे।

(ग) फ़िल्म 'तीसरी कसम' में फ़िल्मी दुनियाँ के सर्वश्रेष्ठ एवं महान कलाकारों ने अभिनय किया था। 'तीसरी कसम' में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे– प्रसिद्ध, नामजद सितारों ने अभिनय किया था। राजकपूर 'हीरामन' की भूमिका में थे और प्रसिद्ध अभिनेत्री ने 'हीराबाई' की भूमिका निभाई थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 11.

'तीसरी कसम' फ़िल्म में दुख के भाव को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है? दुख के वीभत्स रूप से यह दुख किस प्रकार भिन्न है? लिखिए।

Answer:

'तीसरी कसम' फ़िल्म में दुख के भाव को सहज स्थिति में प्रकट किया गया है। इस फ़िल्म में दुखों को जीवन के सापेक्ष रूप में प्रस्तुत किया है। दुख के वीभत्स रूप से यह सर्वथा भिन्न है क्योंकि यहाँ दुखों से घबराकर लोग पीठ नहीं दिखाते। दुखों से हमें घबराना नहीं चाहिए। दुखों का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। दुख के इस रूप को देखकर मनुष्य 'व्यथा' व 'करुणा' को सकारात्मक ढंग से स्वीकार करता है। वह दुखों से परास्त नहीं होता, निराश नहीं होता। इस फ़िल्म में दुख की सहज स्थिति लोगों को आशावादी बनाती है।

Question 12.

'शैलेंद्र के गीत भारतीय जनमानस की आवाज़ बन गए।' इस कथन को पाठ 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' के आधार पर सिद्ध कीजिए।

Answer:

'तीसरी कसम' फ़िल्म के गीत सहज और भावपूर्ण थे। वे गीत कठिन या दुरूह नहीं थे। इन गीतों को शंकर-जयकिशन ने अपना संगीत देकर उसे लोकप्रिय बना दिया था। वे गीत अत्यंत कोमल थे। उन गीतों में सरलता व भावुकता का संगम था। उन गीतों की भाषा इतनी सरल थी कि उन्हें समझना सरल था। चलत मुसाफ़िर मोह लियो रे पिंजड़े वाली मुनियाँ और लाली लाली डोलिया में "गीत ने आम लोगों के दिलों को जीत लिया था।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 13.

'तीसरी कसम' सभी गुणों से पूर्ण होने के बाद भी जनता की भीड़ क्यों नहीं जुटा पाई? तर्क संगत उत्तर दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'तीसरी कसम' फ़िल्म एक महान फ़िल्म थी, परंतु इस फ़िल्म को अधिक वितरक नहीं मिल सके। यद्यपि इस फ़िल्म में नामज़द सितारों ने काम किया था फिर भी इस फ़िल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था। दरअसल, इस फ़िल्म की संवेदना दो से चार बनाने का गणित जानने वालों की समझ से परे थी। इस फ़िल्म में दुखों को ग्लोरीफाई करके नहीं दिखाया गया। इस फ़िल्म में दर्शकों की भावनाओं का शोषण नहीं किया गया। इस फ़िल्म में किसी भी प्रकार के अनावश्यक मसाले नहीं डाले गए थे इसलिए इस फ़िल्म के लिए भीड़ जुट नहीं पाई। यही अनावश्यक मसाले जो फ़िल्म के पैसे वसूल करने के लिए आवश्यक होते हैं, इस फ़िल्म में डाले नहीं गए थे। यह एक शुद्ध साहित्यिक फ़िल्म थी जिसमें लोकप्रियता के तत्वों का अभाव होने के कारण वितरकों ने इस फ़िल्म को खरीदने में रुचि नहीं दिखाई। वस्तुतः वितरक पैसा कमाने को महत्त्व देते थे। वे अच्छी फ़िल्म को महत्त्व नहीं देते थे। मुख्यतः 'तीसरी कसम' फ़िल्म में जनरुचि और लोकप्रियता के तत्वों का ध्यान नहीं रखा गया था क्योंकि शैलेंद्र को फ़िल्म निर्माण करने की कला का अनुभव नहीं था। शैलेंद्र ने फ़िल्म में 'करुणा' व संवेदना की गहराई पर तो ध्यान दिया, परंतु इसे अधिक आकर्षक बनाने के लिए उन्होंने किसी झूठ का सहारा नहीं लिया। इस फ़िल्म की करुणा किसी तराजू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। इसीलिए गीत इस फ़िल्म के प्रदर्शित होने से पहले लोकप्रिय हो गए, फिर भी यह फ़िल्म लोगों की भीड़ जुटा नहीं पाई। उत्कृष्ट कलात्मकता अत्यंत लोकप्रिय संगीत, प्रसिद्ध अभिनेता व अत्यंत नामज़द अभिनेत्री के बावजूद ये फ़िल्म लोगों की भीड़ नहीं जुटा पाई।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 14.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ऐसा नहीं है कि शैलेंद्र बीस सालों तक फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे, परंतु उनमें उलझकर वे अपनी आदमियत नहीं खो सके थे। 'श्री 420' का एक लोकप्रिय गीत है–'प्यार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल।' इसके अंतरे की एक पंक्ति–'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की। उनका खयाल था कि दर्शक 'चार दिशाएँ' तो समझ सकते हैं–'दस दिशाएँ' नहीं। लेकिन शैलेंद्र परिवर्तन के लिए तैयार नहीं हुए। उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

(क) वर्षों तक फ़िल्म-इंडस्ट्री से जुड़े होने पर भी शैलेंद्र ने क्या नहीं खोया?

(ख) संगीतकार जयकिशन क्या बदलना चाहते थे? और क्यों?

(ग) सच्चे कलाकार का क्या कर्तव्य होना चाहिए?

Answer:

(क) वर्षों तक फ़िल्म-इंडस्ट्री से जुड़े होने पर भी शैलेंद्र वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे व उसमें उलझकर वे अपनी आदमियत नहीं खो सके थे।

(ख) संगीतकार जयकिशन को फ़िल्म 'श्री 420' के एक गीत के अंतरे की एक पंक्ति में 'रातों दसों दिशाओं से...' पर आपत्ति थी। उनका खयाल था कि दर्शक 'चार दिशाएँ' तो समझ सकते हैं– दस दिशाएँ नहीं।

(ग) सच्चे कलाकार का कर्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करे। न कि दर्शकों की रुचि की आड़ में उथलेपन को उन पर थोपे।

Question 15.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमारी फ़िल्मों की सबसे बड़ी कमज़ोरी होती है, लोक-तत्त्व का अभाव। वे ज़िंदगी से दूर होती हैं। यदि त्रासद स्थितियों का चित्रांकन होता है तो उन्हें ग्लोरीफ़ाई किया जाता है। दुख का ऐसा वीभत्स रूप प्रस्तुत होता है जो दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सके। और 'तीसरी कसम' की यह खास बात थी कि वह दुख को भी सहज स्थिति में, जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करती है।

मैंने शैलेंद्र को गीतकार नहीं, कवि कहा है। वे सिनेमा की चकाचौंध के बीच रहते हुए यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर थे। जो बात उनकी ज़िंदगी में भी वही उनके गीतों में भी। उनके गीतों में सिर्फ़ करुणा नहीं, जूझने का संकेत भी था और वह प्रक्रिया भी मौजूद थी जिसके तहत अपनी मंज़िल तक पहुँचा जाता है। व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

(क) 'तीसरी कसम' और शैलेंद्र के बीच क्या संबंध है?

(ख) हमारी फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरीफ़ाई क्यों कर दिया जाता है?

(ग) 'तीसरी कसम' में दुःख के भाव को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) शैलेंद्र तीसरी कसम के निर्माता हैं। तीसरी कसम उनके जीवन की पहली और आखरी फ़िल्म है।

(ख) हमारी फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरीफ़ाई कर दिया जाता है, ताकि दर्शकों का भावनात्मक शोषण हो व निर्माता/निर्देशक अधिक-से-अधिक कमाई कर सकें। फ़िल्म को आर्थिक फायदा हो सके।

(ग) 'तीसरी कसम' में दुख के भाव को जीवन सापेक्ष प्रस्तुत किया है। यह फ़िल्म दुख को सहज स्थिति में प्रस्तुत करती है।

Question 16.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

शैलेंद्र तो फ़िल्म–निर्माता बनने के लिए सर्वथा अयोग्य थे। राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र की हैसियत से शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह भी किया। पर वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि थे, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी। 'तीसरी कसम' कितनी ही महान फ़िल्म क्यों न रही हो, लेकिन यह एक दुखद सत्य है कि इसे प्रदर्शित करने के लिए बमुश्किल वितरक मिले। बावजूद इसके कि 'तीसरी कसम' में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे नामजद सितारे थे, शंकर-जयकिशन का संगीत था, जिनकी लोकप्रियता उन दिनों सातवें आसमान पर थी और इसके गीत भी फ़िल्म के प्रदर्शन के पूर्व ही बेहद लोकप्रिय हो चुके थे, लेकिन इस फ़िल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था। दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। उसमें रची-बसी करुणा तराज़ू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। इसलिए जब 'तीसरी कसम' रिलीज हुई, तो इसका कोई प्रचार नहीं हुआ। फ़िल्म कब आई, कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

(क) 'फ़िल्म में रची-बसी करुणा तराजू में नहीं तौली जा सकती थी।' लेखक का क्या आशय है?

(ख) लेखक ने शैलेन्द्र को सर्वथा अयोग्य क्यों कहा है?

(ग) बड़े सितारों के होते हुए भी फ़िल्म नहीं चली? क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) फ़िल्म में रची बसी करुणा तराजू में नहीं तौली जा सकती थी अर्थात् लेखक का आशय है कि इस फ़िल्म में त्रासद स्थितियों को ग्लोरीफाई नहीं किया गया, बल्कि दुख को भी सहज स्थिति में जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत किया है।

(ख) लेखक ने शैलेंद्र को सर्वथा अयोग्य कहा है क्योंकि उनमें धन-लिप्सा नहीं थी। वे दो दुनी चार करने की कला में विश्वास न कर, आत्म संतुष्टि के लिए फ़िल्म बना रहे थे। वे एक आदर्शवादी भावुक कवि थे—जिसे अपार संपत्ति और यश की कामना नहीं थी।

(ग) बड़े सितारों के होते हुए भी फ़िल्म नहीं चली क्योंकि इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। इसका कोई प्रचार नहीं हुआ।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 17.

फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे? और क्यों?

Answer:

फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते थे क्योंकि राजकपूर अभिनय ही नहीं करते थे, परंतु चरित्र के अनुसार उसकी आत्मा में उतर जाते थे, उससे एकाकार हो जाते थे।

Question 18.

शैलेन्द्र के गीत भाव-प्रवण थे– दुरूह नहीं। आशय स्पष्ट कीजिए।

Answer:

शैलेंद्र के गीतों में भावनाओं की प्रधानता होती है। इनके गीतों में प्रयुक्त शब्द सरल होते हैं, कठिन नहीं होते। ये शब्द हमारे दिलों को छू लेते हैं। अपनी भावप्रवणता के कारण ही वे गीत देश-विदेश में आज भी लोकप्रिय हैं। 'प्यार हुआ, इकरार हुआ' और 'मेरा जूता है जापानी' जैसे गीतों में भावप्रवणता और अर्थ की गंभीरता व सरलता देखते ही बनती है।

Question 19.

दरअसल तीसरी कसम फ़िल्म की संवेदना दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है– कैसे? स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

इस फ़िल्म में हर स्थिति को सहज रूप में प्रकट किया गया। किसी भी दृश्य को इस प्रकार ग्लोरीफाई नहीं किया गया जैसे व्यावसायिक वितरक चाहते थे। पैसा कमाने के लिए व्यावसायिक लोग दर्शकों की भावनाओं का शोषण करने से पीछे नहीं हटते। इस फ़िल्म को उनके विचारों से विपरीत कलात्मक एवम् संवेदनशील बनाया गया। अतः यह फ़िल्म दो से चार बनाने वालों की समझ से परे थी।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 20.

फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Answer:

फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र में निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(*i*) वे भावुक और संवेदनशील फ़िल्म निर्माता थे। उन्होंने अन्य फ़िल्मों की तरह दुखों को ग्लोरीफाई करके नहीं दिखाया क्योंकि वे दर्शकों के भावनात्मक शोषण को उचित नहीं समझते थे। उन्होंने मानवीय दुखों को जीवन के सापेक्ष रूप में प्रस्तुत किया।

(*ii*) फ़िल्म निर्माता के रूप में उन्होंने साहित्य रचना के साथ शत प्रतिशत न्याय किया इसीलिए शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को हीरामन बना दिया। हीरामन पर राजकपूर का व्यक्तित्व हावी नहीं हो सका और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी हीराबाई ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया।

(*iii*) शैलेंद्र ने उन सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अभिनय को सरलता से इस प्रकार प्रस्तुत किया, जिसे दुनिया भर के शब्द भी उस भाषा को अभिव्यक्ति नहीं कर सकते।

(*iv*) एक फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र ने शांति, सरलता, भावप्रवणता, कलात्मकता एवं गंभीरता को बहुत अधिक महत्त्व दिया।

फ़िल्मकार के रूप में उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों में राष्ट्रपति स्वर्णपदक, सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म पुरस्कार एवम् मास्को फ़िल्म फेस्टीवल द्वारा दिए गए पुरस्कार प्रमुख हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 21.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। उसमें रची– बसी करुणा तराजू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। इसीलिए बमुश्किल जब 'तीसरी कसम' रिलीज हुई तो इसका कोई प्रचार नहीं हुआ। फ़िल्म कब आई, कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा। ऐसा नहीं, कि शैलेंद्र बीस सालों तक फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे, परंतु वे उनमें उलझकर वे अपनी आदमियत नहीं खो सके थे।

(क) इस गद्यांश में किस फ़िल्म की बात की गई है?

(ख) इस फ़िल्म का कोई प्रचार क्यों नहीं हुआ?

(ग) फ़िल्म इंडस्ट्री के किन तौर तरीकों की बात की गई है?

Answer:

(क) इस गद्यांश में फ़िल्म 'तीसरी कसम' की बात की गई है।

(ख) इस फ़िल्म का प्रचार नहीं हुआ क्योंकि इसको वितरक नहीं मिले। इस फिल्म की संवेदना वितरकों के समझ से परे थी। यह दो से चार बनाने वाले गणितज्ञों की समझ से अलग थी।

(ग) फ़िल्म इंडस्ट्री के लोग धन कमाने को ही अपना एकमात्र लक्ष्य मानते हैं। वे संवेदना और करूणा जैसी भावनाओं को महत्त्व नहीं देते। धन लिप्सा के कारण वे अपनी आदमियत खो देते हैं। वे छल प्रपंच और चकाचौंध की ज़िंदगी जीना पसंद करते हैं।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 22.

'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी– इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

'सैल्यूलाइड' का अर्थ है– फ़िल्म को कैमरे की रील में उतार चित्र प्रस्तुत करना। 'तीसरी कसम' फ़िल्म की पटकथा फणीश्वर नाथ रेणु की अत्यंत मार्मिक साहित्यिक रचना को आधार बनाकर लिखी गई है। इस फ़िल्म में कविता की भाँति कोमल भावनाओं को बखूबी उकेरा गया है। भावनाओं की सटीक एवं ईमानदार अभिव्यक्ति के कारण इसे फ़िल्म न कहकर सैल्यूलाइड पर लिखी कविता कहा गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 23.

'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ के आधार पर लिखिए कि कलाकार के क्या कर्तव्य हैं।

Answer:

शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचियों में परिष्कार करने का प्रयत्न करें। उनके मानसिक स्तर को ऊपर उठाए। वह लोगों में जागृति लाए और उनमें अच्छे-बुरे की समझ विकसित करें। वह दर्शकों पर उनकी रुचि आड़ में उथलापन न थोपे।

2009
गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 24.

निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। और उनका यकीन गलत नहीं था। यही नहीं, वे बहुत अच्छे गीत भी जो उन्होंने लिखे, बेहद लोकप्रिय हुए। शैलेंद्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनके गीत भाव-प्रवण थे–दुरूह नहीं। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी'– यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे। शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए। यही विशेषता उनकी ज़िंदगी की थी और यही उन्होंने अपनी फ़िल्म के द्वारा भी साबित किया था।

(क) फ़िल्मकार प्रायः अपनी फ़िल्मों में उथली चीज़ें क्यों देते हैं?

(ख) कलाकार उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार कैसे कर सकता है?

(ग) क्यों कहा गया है–'यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे?'

(घ) अपनी फ़िल्म के द्वारा शैलेंद्र ने क्या सिद्ध करने का प्रयास किया?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) फ़िल्मकार प्रायः अपनी फ़िल्मों में उथली चीज़ें इसलिए देते हैं क्योंकि ये चीज़ें सहज और सरल तरीके से समझ में आ जाती हैं और दर्शक वाह! वाह! कह उठते हैं। अक्सर फ़िल्मकार की नज़र मुनाफ़े पर रहती है और यही सोचते है कि किस फ़िल्म से कितना मुनाफ़ा होगा, ऐसी ही फ़िल्म बनाई जाए जो खूब चले।

(ख) कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। सही कथानक और सही संवाद व गाने हों। मन को गुदगुदाने वाली कोई भी चीज़ न हों। कहानी को सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए। सही दृश्य हों जो कहानी का वास्तविक रूप दर्शाते हों। अभिनय को कहानी के अनुसार होना चाहिए। फालतु की उछल-कूद या मारपीट, लड़ाई-झगड़ा न हो । दर्शकों का भावनात्मक शोषण न किया जाए। जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करें।

(ग) शैलेंद्र में एक सच्चा कवि-हृदय भी था। इसलिए उन्होंने भावनाप्रद गीत लिखे हैं जो बहुत सरल हैं, कठिन नहीं। दर्शकों को आसानी से समझ में आ जाते हैं। उनमें संवेदनशीलता बहुत थी। उन्हें अपार संपत्ति और यश की इतनी कामना नहीं थी, जितनी आत्मसंतुष्टि के सुख की थी। उनके गीत शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए थे। इसीलिए यह गीत सुनकर कहा गया है कि यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे जो इस प्रकार है—"मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी"

(घ) अपनी फ़िल्म के द्वारा शैलेंद्र ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि एक फ़िल्मकार को झूठे अभिजात्य का कभी पालन नहीं करना चाहिए और न ही दर्शकों की रूचियों की आड़ में उथलेपन को परोसना चाहिए। हर साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय करना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in